अध्याय 41

फ़िरौन के गुप्त स्वप्न

अपने भाइयों और अपने स्वामी की पत्नी से मिले विश्वासघात के पश्चात, यूसुफ़ को उस पिलानेहारे ने भी भुला दिया जिसे उसने बन्दीगृह में प्रोत्साहित किया था। परन्तु वह समय आया जब यूसुफ़ के अर्थ बताने वाले कौशल अर्थात, उस परमेश्वर से जो सब समझता है उसके संपर्क की आवश्यकता फिर से हुई। इन परिस्थितियों के द्वारा यूसुफ़ को बन्दीगृह से निकालकर महल में पहुँचा दिया गया।

फ़िरौन के स्वप्नों का अर्थ बताने में सिद्ध पुरुषों की असफलता (41:1-8)

[1]पूरे दो वर्ष के बीतने पर फ़िरौन ने यह स्वप्न देखा, कि वह नील नदी के किनारे पर खड़ा है। [2]और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गायें निकल कर कछार की घास चरने लगीं। [3]और, क्या देखा, कि उनके पीछे और सात गायें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकली; और दूसरी गायों के निकट नदी के तट पर जा खड़ी हुई। [4]तब ये कुरूप और दुर्बल गायें उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा। [5]और वह फिर सो गया और दूसरा स्वप्न देखा, कि एक डंठल में से सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें निकलीं। [6]और, क्या देखा, कि उनके पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। [7]और इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। तब फ़िरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि स्वप्न ही था। [8]भोर को फ़िरौन का मन व्याकुल हुआ; और उसने मिस्र के सब ज्योतिषियों, और पण्डितों को बुलवा भेजा; और उन को अपने स्वप्न बताए; पर उन में से कोई भी उनका फल फ़िरौन को न बता सका।

आयत 1. याक़ूब को पिलानेहारे और पकानेहारे के स्वप्न का अर्थ बताए हुए **पूरे दो वर्ष** बीत चुके थे वह अभी भी बंदीगृह में था जबकि पिलानेहारे को फ़िरौन की मेज़ पर दाखमधु पिलाने के लिए उसके पद पर फिर से नियुक्त कर दिया गया।

बाइबल के अध्ययनकर्ताओं ने बड़े लम्बे समय से उस फ़िरौन का नाम मालूम करने जिसके स्वप्न का अर्थ यूसुफ़ ने बताया था अध्ययन किया, वृतान्त में राजा

का नाम या उसके राजवंश का वर्णन नहीं मिलता है इसका उतना महत्व है भी नहीं क्योंकि यूसुफ़ इस कहानी का मुख्य पात्र था। मनुष्य के रूप में ऐसा पात्र था जिसे परमेश्वर ने याकूब के घराने को मिस्र से वापस लाने के लिए इस्तेमाल किया जहाँ पर वे रहे और बढ़े जब तक कि मूसा की अगुवाई में वे वहाँ से बाहर न निकले आएं (15:13-16)।

यूसुफ़ के समय में, फ़िरौन और उसके राजवंश की जानकारी की कमी होने के बावजूद, समय समय पर बाइबल आधारित घटनाओं की चर्चा के इतिहास में कई वैज्ञानिक परिकल्पना और वाद-विवाद लगातार चलता रहता है। यूसुफ़ का मिस्र में प्रवेश करने की संभावित तिथि 1876 ई.पू. से 1660 ई.पू. के बीच बताई जाती है।[1] ऐसा लगता है कि दो वैज्ञानिक चर्चा इस की तिथि के लिए सर्वश्रेष्ठ है, जब यूसुफ़ को मिस्र ले जाया गया तब हिक्सोस के राज्यकाल के शुरुआती समय में फ़िरौन के सामने प्रस्तुत किया गया हिक्सोस एशियाई देशों में जन्मे इब्री भाषी लोग थे, और उनके पहले के समय के शासकों और उनके ईश्वरों के नाम सीरियाई और कनानी प्रभाव को अभिव्यक्त करते हैं।[2] मिस्र पर उनकी जीत लगभग 1720 ई.पू. के आसपास मानी जा सकती है; और वे लगभग आधे देश पर लगभग 1550 ई.पू. तक लगातार शासन करते रहे।[3] क्योंकि यूसुफ़ भी सहभाषी प्रवासी था, यही कारण हो सकता है कि उस पर बंदीगृह के दरोगा और फ़िरौन की अनुग्रह की दृष्टि बनी रही।

जो भी हो, सही ऐतिहासिक समय, यूसुफ़ की उन्नति और उसके परिवार का भविष्य तब शुरू हुआ जब **फ़िरौन ने स्वप्न** दो बार देखा और वह अत्यधिक डर गया। पहले स्वप्न में, **वह नील नदी के किनारे खड़ा था**। नील नदी को मिस्र का जीवन स्रोत माना जाता है, जो देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाती है।

आयतें 2-4. राजा ने **सात गायें देखीं, सुन्दर और मोटी मोटी** जो **नील नदी से निकली**। सामान्यता जानवर "सूर्य कि गर्मी और कीड़ों से बचने के लिए नील अपने आप को नदी में गले तक डूबा लेते थे।"[4] नदी से बाहर निकलकर गायें **कछार की घास चरने लगीं** (41:2)। इन पौधों का इब्रानी शब्द אָחוּ *(आचु)* है, जिसका अनुवाद "दलदली घास" (NRSV) भी किया गया है। इस शब्द की उत्पत्ति मिस्र में हुई और इब्रानी में इसका उपयोग किया गया, जो पपाईरस पौधे के लिए प्रयोग किया जाता है और जो नील नदी के दलदली क्षेत्र में पनपता है। यद्यपि मिस्र में बहुत कम मात्रा में बारिश होती है, फिर भी हर वर्ष नील के बाढ़ से पानी और उपजाऊ मिट्टी, लोगों, उनकी फसलों और उनके जानवरों के उपयोग के लिए भरपूर मात्रा में प्रदान किया जाता था। नदी के पास दलदली घास बहुतायत से पायी जाती थी।

फिर उनके पीछे और **सात गायें, जो कुरूप** (वास्तव में, "दिखने में बुरी") **और दुर्बल** ("पतली"; NRSV) **थीं, नदी से निकली**; और दूसरी गायों के निकट **नदी के तट पर जा खड़ी हुई** (41:3)। आश्चर्य की बात है कि तब इन कुरूप और दुर्बल गायों ने कछार की घास नहीं खाई। परन्तु, **उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा गईं**। इस भयावह दृश्य को देख **फ़िरौन** अपनी नींद से जाग

उठा (41:4)।

आयतें 5-7. और वह फिर **सो गया और दूसरा स्वप्न देखा**। दूसरे स्वप्न में अन्न की बालें दिखाई देती हैं, जो मिस्री कृषि का मुख्य फसल थी। फिर उसने देखा कि एक डंठल में से **सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें निकलीं** (41:5)।

और, क्या देखा, कि उनके पीछे **सात बालें पतली** और पुरवाई जो सीनै मरुभूमि के चारों ओर चलती थी, **से मुरझाई हुई निकलीं** (41:6)। और **इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया**। तब फ़िरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि **यह स्वप्न ही था** (41:7)।

आयत 8. जैसे ही **भोर को** फ़िरौन अपने स्वप्न से जागा, वह डर गया **उसका मन व्याकुल हुआ** और उसने अपने स्वप्नों के सही अर्थ मालूम करने की इच्छा जताई, उसने **मिस्र के सब ज्योतिषियों** ["भावी कहने वाले"[5]] **और पण्डितों को बुलवा भेजा**। अर्थ बताने वाले इन जानकारों के पास मार्ग दर्शिका और हस्त-लिखित पुस्तिका हुआ करती थी जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंप दी जाती थी जो इस ज्योतिष कला का अध्ययन करते या सीखते थे। स्वप्न में दिखे उन काल्पनिक प्रतीकों, मुख्य शब्दों और अनेक अर्थों वाले शब्दों को समझने में सहायक तरीकों और उपायों के लिए कई तकनीकों का उपयोग किया गया। सामान्यता, मिस्री भावी कहने वाले पण्डित को लेकर लोगों का यह विचार था कि वे इन तकनीकों के द्वारा राजा के स्वप्न का सही सही अर्थ निकल पाने में समर्थ होंगे।[6] इस मामले में, **अपने स्वप्न बताने के पश्चात**, फ़िरौन को बड़ी निराशा हुई क्योंकि **उसके स्वप्नों का अर्थ उनमे से कोई भी नहीं बता पाया**।

पिलानेहारे द्वारा यूसुफ़ की कुशलता का परिचय (41:9-13)

[9]तब पिलानेहारों का प्रधान फ़िरौन से बोल उठा, "मेरे अपराध आज मुझे स्मरण आए: [10]जब फ़िरौन अपने दासों से क्रोधित हुआ था, और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद करा के अंगरक्षकों के प्रधान के घर के बन्दीगृह में डाल दिया था; [11]तब हम दोनों ने, एक ही रात में, अपने अपने होनहार के अनुसार स्वप्न देखा; [12]वहाँ हमारे साथ एक इब्री जवान था, जो अंगरक्षकों के प्रधान का दास था; अत: हम ने उसको बताया, और उसने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा, हम में से एक एक के स्वप्न का फल उसने बता दिया। [13]और जैसा जैसा फल उसने हम से कहा था, वैसा ही हुआ भी, अर्थात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर वह फाँसी पर लटकाया गया।"

आयत 9. जब **प्रधान पिलानेहारे** को समझ में आया कि उसका स्वामी कितना तनाव में है क्योंकि उसके के सब ज्योतिषिय और पण्डित उसके स्वप्न का अर्थ नहीं बता पाए, तब उसने **फ़िरौन से कहा**। उसने **अपने अपराध** राजा के सामने कह डाला। पाप शब्द का बहुवचन חֲטָאַי (*चेटे*, "पाप") का प्रयोग करते हुए उसने राजा के विरुद्ध (40:1) और यूसुफ़ के विरुद्ध किए अपने अपराध को

बताया। इसके पश्चात, उसने उस इब्री जवान का उसके और पकानेहारे के स्वप्नों का सही अर्थ बताने वाली बात की चर्चा फ़िरौन से करना भूल गया (40:14, 23)।

आयत 10. क्योंकि **फ़िरौन** को दो वर्ष पहले इन स्वप्नों की जानकारी नहीं दी गई थी, उसे स्मरण कराया गया उस समय के बारे में जब वह पिलानेहारे और **प्रमुख पकानेहारे** पर **क्रोधित** हुआ था। पिलानेहारे ने घटनाओं के क्रम को फिर से स्मरण कराया। गम्भीर आरोप लगाकर फिरौन ने इन दोनों पुरूषों को कैद करवा के **अंगरक्षकों प्रधान के घर** के बंदीगृह में डलवा दिया था (40:1-4)।

आयत 11. उसी रात बन्दीगृह में, दोनों ने अपने अपने होनहार के अनुसार समझ के बाहर **स्वप्न देखे**। क्योंकि उनके इन स्वप्नों का अर्थ बताने वाला कोई भी नहीं था वे दोनों बहुत उदास हो गए (40:5-8)।

आयतें 12, 13. अंततः, पिलानेहारे ने यूसुफ़ के बारे में बताया जो एक **इब्री जवान** था, जो **अंगरक्षकों के प्रधान का दास** था। उसने फ़िरौन को बताया कि कैसे उन्होंने अपने अपने स्वप्न के बारे उसे बताया और उसने उनके स्वप्नों का **अर्थ** उनसे कहा (40:9-19)। फिर उसने विस्मित करने वाली फल के बारे में बताया: **"जैसा जैसा फल उसने हम से कहा था, वैसा ही हुआ भी।" पिलानेहारे** को तो उसका **पद** फिर मिला, पर पकानेहारे को **फाँसी पर लटकाया गया** (40:20-22)।

स्वप्नों का अर्थ बताने यूसुफ़ को फ़िरौन का बुलावा (41:14-32)

फ़िरौन के स्वप्न 41:14-24

14तब फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा। और वह झटपट बन्दीगृह से बाहर निकाला गया, और बाल बनवाकर, और वस्त्र बदलकर फ़िरौन के साम्हने आया। 15फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बताने वाला कोई भी नहीं; और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है। 16यूसुफ़ ने फ़िरौन से कहा, मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फ़िरौन के लिए शुभ वचन देगा। 17फिर फ़िरौन यूसुफ़ से कहने लगा, मैं ने अपने स्वप्न में देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूं 18फिर, क्या देखा, कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकल कर कछार की घास चरने लगीं। 19फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात और गायें निकली, जो दुबली, और बहुत कुरूप, और दुर्बल हैं; मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं। 20और इन दुर्बल और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी मोटी गायों को खा लिया। 21और जब वे उन को खा गई तब यह मालूम नहीं होता था कि वे उन को खा गई हैं, क्योंकि वे पहिले की नाईं जैसी की तैसी कुडौल रहीं। तब मैं जाग उठा। 22फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठल में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकलीं। 23फिर, क्या देखता हूं, कि उनके पीछे और

सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। 24और इन पतली बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियों को बताया, पर इस का समझानेहारा कोई नहीं मिला।

आयत 14. यह आयत इस बात का आरंभ है कि कैसे यूसुफ़ एक इब्रानी भाषी बंदी से शक्तिशाली मिस्री शासक के रूप में बदलाव होने की शुरुआत हुई। **फ़िरौन** को इस जवान इब्री से मुलाकात करने की बड़ी बेचैनी थी जो उसके स्वप्नों का सही अर्थ बता सकता था, इसलिए उसने **यूसुफ़ को बुलवा भेजा**। जब राजा ने उसे **कालकोठरी** से महल में **लाने** का आदेश दिया (40:15) तब इस जवान पुरुष के सामाजिक स्तर में तेज़ी से बदलाव आया।

इससे पहले, एक समस्या का समाधान होना था: यूसुफ़ को एक इब्री कैदी के रूप में राजा के सामने श्रोतागण के समान प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और संभवत: उसके मोटे, बिखरे बाल थे। ऐसा हो सकता है कि यूसुफ़ ने सिर मुंडवाया और साथ ही उसके चेहरे पर बाल होने से वह एक मिस्री के समान दिखता था। दीवार पर चित्रकारी बताती है कि मिस्री लोग बाल मुंडाए हुए होते थे।[7] जो फ़िरौन के सामने प्रस्तुत किए जाते थे उसे ढंग से पोशाक पहननी होती थी, जबकि यूसुफ़ के कपड़े निःसंदेह फटे, पुराने और गंदे थे। प्राचीन काल में स्वतंत्र मनुष्य, राजा से भेंट करने के लिए अच्छे कपड़े पहनकर जाते थे जिसमें केवल धनी लोग ही सक्षम होते थे। जबकि यूसुफ़ ने मिस्र में एक दास और कैदी के रूप में तेरह वर्ष बन्दीगृह में बिताए थे, अवश्य ही वह नहीं जानता था कि राजगृह में प्रवेश करने के लिए किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए। फ़िरौन ने ऐसे ही पोशाक उसे दिये जाने का आदेश दिया होगा।

इसलिए, **यूसुफ़ बाल बनवाकर, और वस्त्र बदलकर** फ़िरौन के साम्हने आया। पोशाक का दिया जाना यूसुफ़ के सामाजिक स्तर में बदलाव का एक प्रतीक था; वह अब एक ज्ञाता या ज्योतिष पण्डित के रूप में देखा जाने लगा जो स्वप्न का अर्थ बता सकता था।[8] पूर्ण आवश्यक बाहरी बदलाव के साथ, राजा कि उपस्तिथि में उसे लाया गया।

आयत 15. फ़िरौन ने **यूसुफ़** से कहा, **मैंने एक स्वप्न देखा है** (देखें 41:1)। निःसंदेह स्वप्न का देखा जाना असाधारण नहीं है, परन्तु फ़िरौन के सब ज्योतिषियों या पण्डितों में से किसी ने उस स्वप्न जो वास्तव में दो भागों में था **अर्थ** नहीं बता सका। यूसुफ़, उसने उसे **यह कहते सुना** कि जैसे ही यूसुफ़ कोई **स्वप्न** सुनता था, वह तुरंत उसका **अर्थ** बता पाता था। यूसुफ़ ने पिलानेहारे और पकानेहारे के स्वप्नों के अर्थ भी शीघ्र ही दे दिए थे। परन्तु, अपने भुलक्कड़पन में, पिलानेहारे के स्वप्न का अर्थ बताने में यूसुफ़ की व्यक्तिगत योग्यता से इंकार करने के बारे में फ़िरौन को बताने में असफल रहा। उसने इसका श्रेय परमेश्वर को उसकी महिमा के लिए दिया (40:8)।

आयत 16. जैसे ही **यूसुफ़** ने फिरौन की बात सुनी, उसने उत्तर दिया, **मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फ़िरौन के लिए शुभ** [שָׁלוֹם, *शालोम*, "शांति

का"] **वचन देगा।** दूसरे शब्दों में, यूसुफ़ ने फ़िरौन को परमेश्वर की योग्यता जिससे वह उसके व्याकुल मन को शांति और भलाई देगा। NTL लिखता है "परमेश्वर तुम्हें इसका अर्थ बता सकता है और तुम्हें सहजता से खड़ा कर सकता है।"

आयतें 17-24. फ़िरौन ने अपने स्वप्नों के विषय में यूसुफ़ को बताया, उन मुख्य मुद्दों को दोहराते हुए जिन्हें उसने मिस्र के ज्योतिषियों को बताया था (देखें 41:1-8) **सात मोटी और सुन्दर गायों** (41:18) का उसका वर्णन **उन सात दुबली और कुरूप गायों** (41:19) के विरुद्ध एक समरूप विषमता प्रदान करता है। और, जो शब्द उसने उन **सात अच्छी अच्छी** और **अन्न से भरी बालों** (41:22) का वर्णन करने के लिए किया वे उन सात **छूछी, पतली और मुरझाई बालों** (41:23) के वर्णन से मेल खाते हैं। जिस प्रकार से, **उन पतली और कुरूप गायों ने उन पहली सात मोटी गायों को खा लिया था** (41:20), **उसी प्रकार से उन पतली बालों ने उन सात अच्छी बालों को निगल लिया** (41:24)।

जैसे फ़िरौन ने अपने स्वप्नों के विषय में यूसुफ़ को बताया, उसने उन दुर्बल गायों और पतली बालों के भयंकर दृश्य पर विशेष ज़ोर दिया। वास्तव में, उसने कहा की **ऐसी कुरूपता उसने सारे मिस्र में कभी नहीं देखी** (41:19)। पतली गायों के मोटी गायों को खा जाने के विषय में बताने के बाद, उसने टिप्पणी की कि किसी को मालूम नहीं होता कि **वे उनको खा गईं, क्योंकि वे पहले के समान जैसी की तैसी कुडौल रहीं** (41:21)।

अंत में, फ़िरौन ने यूसुफ़ को सूचित किया कि उसने यह सब कुछ **ज्योतिषियों** को बताया था, पर उसके इन भयानक स्वप्नों का **समझानेवाला** कोई न मिला (41:24)। फ़िरौन ने यह एहसास किया की उसने भविष्य कि कुछ बुरी घटनाओं के विषय में चेतावनी देखी थी। क्योंकि उसके अपने पंडित और ज्योतिषी इन स्वप्नों का अर्थ नहीं समझा पाए थे, वह बेक़रार था। वह एक संतोषजनक अर्थ जानने के लिए कुछ भी करने को तैयार था - कारावास में बंद एक इब्रानी कैदी से सहायता के लिए भी! यह बेकरारी यह समझने में सहायता करती है की उसने क्यों यूसुफ़ के बताए अर्थ को स्वीकार किया और उसे मिस्र में दूसरे स्थान पर अधिकारी बनाया दिया। जब उसने स्वप्नों के अर्थ को सुना तो, फ़िरौन ने वास्तव में विश्वास किया कि मिस्र को बचाने के लिए यूसुफ़ परमेश्वर का साधन है।

फ़िरौन के स्वप्नों का अर्थ (41:25-32)

[25]तब यूसुफ़ ने फ़िरौन से कहा, "फ़िरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो काम करना चाहता है, उसको उसने फ़िरौन पर प्रगट किया है। [26]वे सात अच्छी अच्छी गायें सात वर्ष हैं; और वे सात अच्छी अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं; स्वप्न एक ही है। [27]फिर उनके पीछे जो दुर्बल और कुडौल गायें निकली, और जो सात छूछी और पुरवाई से मुरझाई हुई बालें निकली, वे अकाल के सात वर्ष होंगे।

[28]यह वही बात है जो मैं फ़िरौन से कह रहा हूँ कि परमेश्वर जो काम करना चाहता है, उसे उसने फ़िरौन को दिखाया है। [29]सुन, सारे मिस्र देश में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे। [30]उनके पश्चात सात वर्ष अकाल के आएँगे, और सारे मिस्र देश में लोग इस सारी उपज को भूल जाएंगे; और अकाल से देश का नाश होगा। [31]और सुकाल (बहुतायत की उपज) देश में फिर स्मरण न रहेगा, क्योंकि अकाल अत्यंत भयंकर होगा। [32]और फ़िरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है इसका भेद यह है कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।"

आयत 25. फ़िरौन के स्वप्नों का विवरण सुनने से पहले, **यूसुफ़** ने दृढ़ता से कहा की स्वप्नों का अनुवाद **परमेश्वर** की ओर से आता है; फिर भी पाठ कहीं भी यूसुफ़ को प्रभु से इन स्वप्नों का अर्थ समझने के निमित्त मार्गदर्शन या बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हुए नहीं दिखाता। न ही पाठ यह संकेत देता है की यूसुफ़ को इसके सही अर्थ का कोई पूर्व प्रकाशन मिला था। वह केवल यूसुफ़ के स्वप्न के महत्त्व को बताने की तत्काल प्रतिक्रिया को दर्ज करता है। उसने कहा की स्वप्न **एक ही** है क्योंकि **फ़िरौन** ने जो भी देखा था वह उसी से संबंधित था जो परमेश्वर **करने वाला** था।

आयत 26. यूसुफ़ ने फ़िरौन के स्वप्न का अनुवाद रूपक के तरीके से किया, जैसे कि उसने 40:9-19 में पिलानेहारे और पकानेहारे के स्वप्नों के विषय में किया था। **वे सात अच्छी गायें सात वर्षों** की प्रतीक थीं, जैसे कि **वे सात अच्छी बालें थीं**; **स्वप्नों** का संकेत **एक ही** समयकाल की ओर था।

आयत 27. उसी प्रकार से, **वे सात पतली और कुरूप गायें** लाक्षणिक रूप से सात वर्षों की ओर, और **वे पुरवाई से मुरझाई सात पतली बालें सात वर्षों के अकाल** की ओर संकेत कर रही थीं।

आयतें 28-31. फिर यूसुफ़ ने **फ़िरौन** को दोबारा बताया कि उसके स्वप्नों के द्वारा, परमेश्वर ने राजा को दिखाया **वह क्या करने जा रहा था** (41:28)। प्रथम, **सारे मिस्र देश** में सात वर्ष तो **बहुतायत की उपज** के होंगे (41:29), परन्तु उनके पश्चात **सात वर्ष अकाल** के आएँगे। वह अकाल बहुतायत के वर्षों की यादों को अपने सर्वनाश के कारण लोगों के मनों से मिटा देगा, क्योंकि उस अकाल से **देश का नाश** होगा (41:30)। वास्तव में, वह देश अपने द्वारा अनुभव किए जाने वाले **बहुतायत** को ऐसे भुला देगा, जैसे की वह कभी हुआ ही न था, उसके पश्चात आने वाले अत्यंत भयंकर **अकाल के कारण** (41:31)।

आयत 32. अपना अनुवाद देने के बाद, यूसुफ़ ने **फ़िरौन** को **उस स्वप्न** के **दो बार** आने के पीछे की गंभीरता को समझाया: इस बात को साबित करता है कि **यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है**, और **परमेश्वर उसे शीघ्र ही पूरा करेगा।**

इस अनुवाद की प्रक्रिया के दौरान, यूसुफ़ ने फ़िरौन के स्वप्नों के अर्थ समझाने के द्वारा, परमेश्वर के प्रवक्ता (नबी) होने की भूमिका निभाई। कुछ हद

तक, उसका अपना जीवन मिस्र के लिए इस पूर्व-सूचना से उलट था। उसने अपने स्वयं के अकाल का अनुभव किया था अपने दासत्व के दौरान और कारावास में बिताए वर्षों में, फिर भी उसके निकटतम तरक्की और समृद्धि उसे उसके कारावास के जीवन की दरिद्रता से ऊपर उठाने वाले थे।[9]

कुछ लेखक इस वृतांत के ऐतिहासिक खरेपन को, और उसी प्रकार से सात वर्षों के बहुतायत के बाद सात वर्षों के अकाल पड़ने की भविष्यवाणी को ठुकरा देते हैं। परंतु, मिस्र और मेसोपोटामिया के साहित्यों में कई बार वर्णन किया जाना इस बात को प्रमाणित करता है कि प्राचीन लोग जिस परिणाम से बहुत डरते थे वह था सात वर्षों का अकाल क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्था लगभग सम्पूर्ण रूप से खेती-बाड़ी पर ही आधारित थी। इसके विपरीत, लोग सात वर्षों की बहुतायत की उपज को उनके ऊपर अपने देवता(ओं) द्वारा उंडेली जाने वाली भरपूर आशीष के रूप में देखते थे।

एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, फिर, प्राचीन जगत में त्यौहार और अकाल का बारी बारी से चलने वाला कालचक्र कोई नई बात नहीं थी। गिलगामेशी महाकाव्य और युगारिती साहित्य दोनों सात वर्षों के अकाल का संकेत देते हैं, और एक मिस्री शिलालेख जोसर (2600 ई.पू.) के समय में सात वर्षों के अकाल के दौरान राहत कार्य किए जाने का वर्णन करता है।[10] एक समान अकाल का वर्णन मिलता है एक मिस्री दस्तावेज़ *विज़न्स ऑफ़ नेफ़ेरति* में, जो की अमनाम्हात प्रथम (1991-1962 ई.पू.) के शासन के समय का है।[11] आलोचकों के पास यूसुफ़ द्वारा फ़िरौन के स्वप्नों के अनुवाद के वृतांत को ठुकराने का कोई कारण नहीं है, सिवाय इसके कि संदेह करना कि परमेश्वर - हमारा सृष्टिकर्ता और परमप्रधान प्रभु - जगत में अपने परम उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रकृति और दुर्बल मनुष्यजाति के द्वारा क्या कर सकता है।

यूसुफ़ की बुद्धिमान योजना (41:33-36)

[33]इसलिए अब फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमान पुरुष को ढूँढ कर के उसे मिस्र देश पर प्रधान मंत्री ठहराए। [34]फ़िरौन यह करे कि देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे, और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहें तब तक वह मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे। [35]और वे उन अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा करें, और नगर नगर में भंडार घर भोजन के लिए, फ़िरौन के वश में करके उसकी रक्षा करें। [36]यह भोजनवस्तु अकाल के उन सात वर्षों के लिए, जो मिस्र देश में आएँगे, देश के भोजन के लिए रखी रहे, जिससे देश का उस अकाल से सत्यानाश न हो जाए।"

आयत 33. बजाय केवल बहुतायत के बाद आने वाले अकाल के समयकाल की भविष्यवाणी का अर्थ बताने के, यूसुफ़ ने राजा के मूल निवेदन परे उसे अपनी सलाह भी दी। उसने **फ़िरौन** से आग्रह किया आने वाली घटनाओं के विषय में

दैवी चेतावनी की प्रतिक्रिया देते हुए, **अब**, शीघ्रता और निर्णायक रूप से, कदम उठाए।

राजा से कहा गया था कि उसे **समझदार** [चतुर] **और बुद्धिमान पुरुष को ढूँढना** चाहिए, जिसका **मिस्र देश पर अधिकार** होगा। राजा ने हाल ही में यह जाना था कि उसके पास ऐसा कोई भी नहीं है; तो, बड़ी चतुराई से यूसुफ़ मिस्र के ज्योतिषियों और पण्डितों को खारिज कर रहा था, जिससे कि उस स्थान के लिए केवल वही शेष रह जाए।

आयत 34. इसके अतिरिक्त, उसने सलाह दी कि **फ़िरौन** को **देश पर अधिकारियों को नियुक्त करने का कदम उठाना चाहिए**, उन्हें उन **सात वर्षों की बहुतायत** के दौरान **मिस्र देश** की उपज के **पंचमांश** को इकट्ठा करने और भंडार में रखने का सामर्थ प्रदान करते हुए। राजा को अपनी राजाज्ञा को पूरा करवाने के लिए नियंत्रित वितरण के निमित्त एक राष्ट्रीय प्रणाली का गठन करना था और कर्मचारियों की एक विशाल मण्डली को स्थापित करना था। यह काम इतना सरल नहीं था क्योंकि इस भीषण योजना के लिए फ़िरौन का एकमात्र आधार था एक इब्रानी दास/कैदी के शब्द। इस योजना के लिए विश्वास की आवश्यकता थी! कर्मचारियों को बहुत बड़ी मात्रा में भंडार में अनाज रखना होगा कि उस अनदेखे भविष्य में आने वाले सात वर्षों के अकाल के दौरान प्रबंध किया जा सके।

आयत 35. अपने आदेशों को जारी रखते हुए, यूसुफ़ ने समझाया कि सरकार की तरफ़ से नियुक्त अधिकारी उन आनेवाले **अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा करें**। उन्हें **फ़िरौन के वश में नगर नगर में भंडार घर** में **भोजन इकट्ठा** करना था और विश्वासयोग्य अधिकारियों को उसकी **रक्षा के लिए** नियुक्त करना था।

आयत 36. यह पूरा हो जाने के बाद, उनके द्वारा भंडार में इकट्ठा किया हुआ **भोजन अकाल के** उन **सात वर्षों** के लिए **अलग रखा जाएगा**, जो **मिस्र के देश** पर पहले से नियत थे। यह सारी तैयारी ज़रूरी थी जिससे **देश का उस अकाल के दौरान सत्यानाश न हो**।

एक दशक से अधिक समय तक दुरुपयोग किए और ठुकराए जाने के बाद, यूसुफ़ ने अपने आपको मिस्र के राजा के समक्ष सुन्दर वस्त्रों में खड़ा पाया, लोगों को उससे अनुरोध के साथ सहायता माँगते हुए। परमेश्वर को सारा श्रेय देते हुए, यूसुफ़ ने फ़िरौन के परेशान करने वाले स्पप्नों का अनुवाद किया और भरपूरी के वर्षों से अधिकाधिक प्राप्त करके संभावित अकाल के वर्षों का प्रबंध करने की एक संचालन योजना पेश की ताकि वह आने वाले अकाल में बने रहें। उस योजना की बुद्धिमत्ता ने फ़िरौन को प्रभावित किया, और यूसुफ़ के जीवन के अगले पड़ाव का शुभारंभ हुआ।

यूसुफ़ को फ़िरौन का पुरस्कार (41:37-45)

[37]यह बात फ़िरौन और उसके सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी। [38]इसलिए

फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों से कहा, "क्या हमको ऐसा पुरुष, जैसा यह है जिसमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है?" 39फिर फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है कि तेरे तुल्य कोई इतना समझदार और बुद्धिमान नहीं; 40इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझसे बड़ा ठहरूंगा।" 41फिर फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "सुन, मैं तुझको मिस्र के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूँ।" 42तब फ़िरौन ने अपने हाथ से अँगूठी निकाल के यूसुफ़ के हाथ में पहिना दी; और उसको बढ़िया मलमल के वस्त्र पहिनवा दिया, और उसके गले में सोने की ज़ंजीर डाल दी; 43और उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़ाया; और लोग उसके आगे आगे यह प्रचार करते चले कि घुटने टेक कर दंडवत करो, और उसने उसको मिस्र के सारे देश के ऊपर प्रधान मंत्री ठहराया। 44फिर फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "फ़िरौन तो मैं हूँ, पर सारे मिस्र देश में कोई भी तेरी आज्ञा के बिना हाथ-पाँव न हिलाएगा।" 45तब फ़िरौन ने यूसुफ़ का नाम सापनत्पानेह रखा; और ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उसका विवाह करा दिया। और यूसुफ़ सारे मिस्र देश में दौरा करने लगा।

आयत 37. यूसुफ़ का **अतिआवश्यक प्रस्ताव फ़िरौन** को और राजा के दरबार के **सारे कर्मचारियों को अच्छा लगा**, हालाँकि उसने स्वप्न का उदासीन अनुवाद दिया था। फ़िरौन ने स्वयं भी उन स्वप्नों को सहज-ज्ञान से भयंकर जाना था, परन्तु यूसुफ़ उस आने वाली विपत्ति से बचने के लिए सक्रीय कदम उठाने की सलाह दी और वह उस भयानक पूर्व-सूचना से आगे बढ़ गया था।

आयत 38. फ़िरौन ने **अपने सेवकों** को यह चुनौती दी, **"क्या हमको ऐसा पुरुष, जैसा यह है जिसमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है?"** उसके प्रश्न का निहितार्थ तो स्वाभाविक रूप से नकारात्मक ही था। वह वास्तव में कह रहा था, "मेरे पंडित और ज्योतिषी इस कठिन समय पर असफल रहे हैं, और हम इस प्रकार के दूसरे पुरुष को पाने की आशा नहीं कर सकते, जिसके अन्दर परमेश्वर की आत्मा है, जो भविष्य बता सकता है!" दानिय्येल 5:5-16 में एक अन्य घटना का उदाहरण है जिसमें राजा के जादूगर परमेश्वर के एक सन्देश का अनुवाद नहीं कर सके, परन्तु परमेश्वर के जन को ऐसा करने के लिए लाया गया।

आयतें 39, 40. यूसुफ़ को संबोधित करते हुए, **फ़िरौन** ने कहा, **"परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है कि तेरे तुल्य कोई इतना समझदार और बुद्धिमान नहीं।"** राजा ने मौखिक रूप से यूसुफ़ की असामान्य योग्यताओं को मान्यता दी। इसके पश्चात, उसने एक चौंका देने वाली घोषणा की: **"इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी,**[12] **केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझसे बड़ा ठहरूंगा।"** इस कथन को इससे अधिक महत्त्व नहीं दिया जा सकता: यूसुफ़ को पोतीपर के घर का (39:4), और फिर कारागार का (39:22, 23; 40:3, 4), और अब फ़िरौन के घर का (41:40) अधिकारी बनाया गया था। उस दिन के बाद, फ़िरौन, जो "राजगद्दी पर" बैठा था, ही मिस्र

में यूसुफ़ "से बड़ा" होगा। यूसुफ़ के लिए एक बड़े सम्मान का समय आ गया था।

फ़िरौन द्वारा किसी को ऐसी प्रतिष्ठा के पद पर नियुक्त किया जाना एक चौंका देने वाला विचार था, परन्तु राजा ने यह ऐलान किया कि यूसुफ़ के पास उसके पूरे "घर" (בַּיִת, *बयीथ)* का नियंत्रण होगा। बयीथ शब्द का अनुवाद व्यापक रूप से किया जाता था "एक राजभवन," जिसमें राजा की "रियासत" शामिल हो सकती थी। यदि ऐसी बात थी, तो यूसुफ़ एक उच्चाधिकारी के पद पर उठाया जा रहा था। इस हैसियत से, वह राजभवन और मिस्र देश के सम्पूर्ण मामलों का प्रभारी हो सकता था। इसके अतिरिक्त, सारे महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर उसकी मोहर लगना ज़रूरी था, और प्रत्येक सरकारी अधिकारी सीधे तौर पर उसके आदेश के अधीन होने वाला था। एक उच्चाधिकारी के तौर पर, यूसुफ़ वास्तव में फ़िरौन के नाम में शासन और उसकी अनुपस्थिति में कार्य करने वाला था।[13]

आयत 41. **फ़िरौन** ने **यूसुफ़** से यह भी कहा, **"सुन, मैं तुझको मिस्र के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूँ।"** यूसुफ़ के शासकीय अधिकार बाद में प्रत्यक्ष होते हैं, जब उसने खुद को अपने भाइयों पर प्रकट किया और उनसे कहा "परमेश्वर ने उसे [फ़िरौन] के सारे घर का स्वामी [אָדוֹן, *अदोन]* और सारे मिस्र देश का प्रभु [מֹשֵׁל, *मोशेल]* ठहरा दिया है" (45:8; देखें 45:26; भजन. 105:21)। उसके पद और अधिकार का ऐसा वर्णन सीधे तौर पर मिस्र के उच्चाधिकारी होने की ओर संकेत करता है।[14]

आयत 42. उसके नए पद का महत्त्व और भी दृढ़ हो गया जब **फ़िरौन ने अपने हाथ से अँगूठी निकाल के यूसुफ़ को पहिना दी**। इस युवा इब्रानी को उपहार में मुहर वाली अँगूठी दिया जाना ध्यान देने योग्य है क्योंकि यह "शाही मुहर-वाहक" की उपाधि को दर्शाता है। मूल में, यह यूसुफ़ को शाही अधिकार दिए जाने का संकेत देता है। इस मुहर के प्रयोग से, वह राजा के नाम में किसी भी दस्तावेज़ की पुष्टि कर सकता था (देखें 1 राजा 21:8; एस्तेर 3:10, 12; 8:8) और मिस्र में अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं का प्रबंध भी कर सकता था। फ़िरौन इस मुहर का बुद्धिमानी से प्रयोग करने के लिए यूसुफ़ पर भरोसा कर रहा था जैसे वह आने वाले अकाल के सात वर्षों के लिए मिस्र के धन में से भारी मात्रा में खर्च करने का अधिकार था।

इसके अतिरिक्त, फ़िरौन ने **उसको बढ़िया मलमल के वस्त्र पहिनवा दिया, और उसके गले में सोने की ज़ंजीर डाल दी** (देखें दानिय्येल 5:7, 16, 29)। जो शब्द यहाँ "मलमल" के लिए प्रयोग किया गया है, वह है שֵׁשׁ (*शेष)*, मिस्र से उधार लिया हुआ शब्द जो उत्कृष्ट वस्त्र की ओर संकेत करता है।[15] प्राचीन मिस्र में, राजदरबार के अधिकारी इसी कपड़े के वस्त्र पहनते थे। सैंकड़ों वर्ष बाद, यहूदियों की याजकीय पोशाकें भी इसी प्रकार के मलमल से बनाई जाती थीं (निर्गमन 39:27)। गले में सोने की ज़ंजीर (गलपट्टा) डालना मिस्र के राजा तब किया करते थे जब वे अपने सेवकों को उच्च सम्मान प्रदान करते थे। ऐसे दृश्यों को प्राचीन मिस्र की कब्रों की दीवारों पर दर्शाया गया था, और इनमें से कुछ आज

भी देखे जा सकते हैं।[16]

आयत 43. यूसुफ़ को ऊंचा सम्मान प्रदान करने में फ़िरौन का अगला कदम था **उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़ाना** (देखें 1 राजा 1:32-40; एस्तेर 6:6-11)। इस तरह से, उसने सार्वजनिक रूप से इस बात का प्रदर्शन किया कि उसका उच्चाधिकारी सच में केवल उसका द्वितीय था। राजा ने यह निश्चित किया की यूसुफ़ को उचित सम्मान दिया जाए, अग्रदूतों द्वारा उसके **आगे आगे** प्रचार करना कि **घुटने टेककर दंडवत करो।**

इस घोषणा के साथ, फ़िरौन ने उसको यूसुफ़ **मिस्र के सारे देश के ऊपर** प्रधान मंत्री ठहराया। कुछ संदेहवादी इस बात पर विवाद करते हैं कि मिस्र के फ़िरौन ने एक विदेशी, एक सामी (इब्रानी), को इतना ऊंचा सम्मान प्रदान किया होगा। इस प्रकार पदोन्नति हिक्सोस राज-वंश (1720-1550 ई.पू.) के समय में असामान्य नहीं होता था, क्योंकि इन शासकों ने कभी कभी सामियों को ऊंचे पदों पर नियुक्त किया था।[17] प्रशंसनीय है कि, परमेश्वर की विधि में, फ़िरौन यूसुफ़ की अधिकार के पद पर नियुक्ति ऐसे अनुकूल समय में करे। यह बिना सोचे कि यूसुफ़ के समय में मिस्र की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति जो भी रही हो, वह जब भी था, हमें इन घटनाओं को अपनाना होगा क्योंकि उनको बाइबलीय लेखे में दर्ज किया गया है।

आयत 44. फ़िरौन ने **यूसुफ़** का सम्मान करना जारी रखा यह कहते हुए, **"फ़िरौन तो मैं हूँ, पर सारे मिस्र देश में कोई भी तेरी आज्ञा के बिना हाथ-पाँव न हिलाएगा।"** यह वाक्य "हाथ-पाँव न हिलाएगा" एक तरीका है यह बोलने का कि मिस्र में कोई भी किसी महत्पूर्ण काम को यूसुफ़ के अधिकार के बिना नहीं करेगा। फ़िरौन यूसुफ़ के अधीन अन्य अधिकारियों को नियुक्त करेगा, और वे दोनों मिलकर फ़िरौन का प्रतिनिधित्व करेंगे जैसे वे बचाव-कार्य पर कदम उठाएंगे। वे भरपूरी के सात वर्षों के दौरान अनाज की फसल के पंचमांश के इकट्ठा किए जाने की अध्यक्षता करेंगे (41:34), और वे इसे अनाज के भंडार में रखवाने का प्रबंध करेंगे ताकि वह अकाल के सात वर्षों के दौरान इस्तेमाल किया जा सकें (41:35, 36)। यह सब कुछ यूसुफ़ के प्रत्यक्ष अधिकार क्षेत्र के अधीन होगा। वह वास्तव में फ़िरौन का दायाँ हाथ बनने वाला था।

आयत 45. जैसे **फ़िरौन** ने **यूसुफ़** को एक मिस्री बनाने और उसे औपचारिक रूप से उसके नए पद पर पदासीन करने की प्रक्रिया जारी रखी, उसने उसे एक मिस्री नाम दिया: **सापनत्-पानेह**।[18] हिक्सोस राज-वंश के दौरान सीरिया और फिलिस्तीन से आए विदेशियों को मिस्री नाम देने की प्रथा उनके साहित्य में भली-भांति साक्ष्यांकित है। परंतु, इस प्राचीन पद-नाम का अर्थ निश्चित नहीं है। कई प्रस्तावित अनुवादों में से, कुछ जो उचित जान पड़ते हैं उनमे शामिल है "परमेश्वर बात करता है और वह जीवित है," "उस परमेश्वर ने कहा है: वह जीवित रहेगा," और "देश की जीविका इस जीवित जन से है।"[19] पहला सबसे अधिक संभावित लगता है, क्योंकि फ़िरौन को यह यकीन हो गया था कि यूसुफ़ का "देवता"[20] जीवित है और उसने सच में यूसुफ़ पर ऐसा प्रकट किया है कि आने

वाले अकाल से बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

एक नए नाम के साथ, राजा ने यूसुफ़ को **एक पत्नी** भी दी: **ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत**। फ़िरौन, बिलकुल, जानता था की उसके खुबसूरत उच्चाधिकारी को एक योग्य पत्नी की आवश्यकता है; तो यूसुफ़ की पदोन्नति की पूर्ती एक उपहार से की गई, जो युवा, और शायद सुन्दर स्त्री थी। उसका नाम "आसनत" एक ऐसा नाम था जिसे एक मिस्री याजक द्वारा अपनी बेटी को दिए जाने की अपेक्षा की जा सकती थी। शायद इसका अर्थ था "वह नीट [देवी] की है।"[21] "पोतीपेरा" नाम का अर्थ था "वह जिसे रे [सूर्यदेवता] ने दिया है।"[22] प्राचीन काल में, ओन नगर,[23] जो की वतमान के काइरो नगर की उत्तरपूर्वी दिशा में करीब दस मील की दूरी पर था, मिस्र के सूर्यदेवता के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक था। बाद में, यिर्मयाह ने बेबीलोन के नबूकदनेस्सर द्वारा इस मंदिर को ढाए जाने की भविष्यवाणी की। उसने उसके खम्भों का वर्णन किया और उसके लिए इब्रानी शब्द "बेथ-शेमेश" ("सूर्यदेवता का घर") का प्रयोग किया, जिसका अंग्रेज़ी का NASB यिर्मयाह 43:13 में करता है "हेलिओपोलिस।" ओन का याजक होने के नाते, पोतीपेरा शायद मिस्र के धनी और प्रसिद्ध परिवारों में से रहा होगा। फ़िरौन के आशीर्वाद और अधिकार और एक सामर्थशाली ससुर के साथ, **यूसुफ़** की एक अनुकूल शुरुआत हुई **जब वह सारे मिस्र देश में दौरा करने लगा**।

बहुतायत के सात वर्षों में यूसुफ़ की तैयारी (41:46-49)

[46]जब यूसुफ़ मिस्र के राजा फ़िरौन के सम्मुख खड़ा हुआ, तब वह तीस वर्ष का था। वह फ़िरौन के सम्मुख से निकलकर सारे मिस्र देश में दौरा करने लगा। [47]सुकाल के सातों वर्षों में भूमि बहुतायत से अन्न उपजाती रही, [48]और यूसुफ़ उन सात वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तुएं, जो मिस्र देश में होती थीं, जमा करके नगरों में रखता गया; और हर एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में इकट्ठा करता गया। [49]इस प्रकार यूसुफ़ ने अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यंत बहुतायत से राशि राशि गिन के रखा, यहाँ तक की उसने उनका गिनना छोड़ दिया क्योंकि वे असंख्य हो गईं।

आयतें 46. 37:2 में, **यूसुफ़** एक भोला-भाला सत्रह वर्षीय, अपने भाइयों की जलन का शिकार था। उसने अपने अगले तेरह वर्ष एक दास और फिर एक बंदी के रूप में बिताए। अब तक वह मानसिक और शारीरिक तरीके से परिपक्व हो चुका था। **तीस वर्ष** का होने पर, कष्टों और निराशाओं का उसका कुस्वप्न समाप्त हो चुका था। परमेश्वर की सुरक्षा के परिणामस्वरूप, उसको **मिस्र** में बड़ा सम्मान मिला और वह **फ़िरौन के सम्मुख** उसके नव-नियुक्त उच्चाधिकारी के रूप में खड़ा हो सका था। इसीलिए, **यूसुफ़ फ़िरौन के सम्मुख से निकलकर सारे मिस्र देश में दौरा करने लगा**, उसको सौंपे कर्तव्य की शुरुआत करने के लिए।

आयत 47. जल्द ही फ़िरौन के स्वप्नों की, यूसुफ़ द्वारा अनुवाद किए जाने के अनुसार, पूर्ति की शुरुवात होने लगी। **सुकाल के सातों वर्षों में भूमि बहुतायत से अन्न उपजाती रही** और भरपूर फसल लाती रही।

आयतें 48, 49. इसीलिए, एक उच्चाधिकारी होने के नाते, यूसुफ़ ने **सारे मिस्र देश के नगरों में** अनाज के लिए भंडारघरों के निर्माण हेतु एक कर्मचारी-बल को कार्यरत करने का आदेश दिया। जैसे अनाज की फसल हुई, उसने उन **सात वर्षों में चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं** के प्रत्येक पांचवे हिस्से (41:34) को **जमा किया** और **अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यंत बहुतायत से राशि राशि गिन के रखा।**[24] वास्तव में, अनाज की मात्रा इतनी अधिक हो गई थी उससे मिस्री अधिकारी हैरान हो गए। और कुछ समय के बाद, **उन्होंने गिनना ही छोड़ दिया क्योंकि वे असंख्य हो गईं थीं।**

मिस्र में यूसुफ़ की संतान (41:50-52)

[50]अकाल के प्रथम वर्ष के आने से पहले यूसुफ़ के दो पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे। [51]यूसुफ़ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे रखा, कि "परमेश्वर ने, मुझसे मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।" [52]दूसरे का नाम उसने यह कहकर एप्रैम रखा, कि "मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फलवंत किया है।"

आयत 50. मिस्र सात वर्ष तक फलवंत था **अकाल के प्रथम वर्ष के आने से पहले**। यूसुफ़ भी फलवंत हुआ: उसके **दो पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे**। प्राचीन काल में, बच्चों के पैदा होने और अच्छी फसल के होने को परमेश्वर की आशीषों का संकेत समझा जाता था (व्यवस्थाविवरण 28:4)।

आयत 51. यह सामान्य बात थी की स्त्रियाँ अपने बच्चों का नाम घटना की समझ या भावनाओं के अनुरूप या फिर भविष्य के लिए अपनी आशा के अनुसार रखती थीं (4:1, 25; 29:32-35; 30:6, 8, 11, 13, 18, 20, 24; 35:18; निर्गमन 2:10; 1 शमूएल 1:20)। परन्तु आसनत ने अपने बच्चों को नाम नहीं दिए; यूसुफ़ ने अपने बेटों को अपने स्वयं के अनुभवों के अनुसार **नाम दिए**, जो कि उसके नए देश से विपरीत दिशा में जा रहे थे।

मिस्र के देश ने लगभग सात वर्षों की समृद्धि को देखा था, और अकाल के वर्ष आने वाले थे। इसकी तुलना में, यूसुफ़ ने एक दास/बंदी होकर कई वर्षों के अकाल और गरीबी का अनुभव किया था परन्तु अब वह जीवन के एक नए पड़ाव का आनंद ले रहा था, जो समृद्ध और फलवंत था। बजाय एक मिस्री नाम देने के, उसने अपने **जेठे पुत्र** को इब्रानी नाम दिया: **मनश्शे** ("भुलाने वाला"); यूसुफ़ ने शब्दों से खेलते हुए इस नाम का अर्थ समझाया, उसने कहा, **"परमेश्वर ने ,मुझसे मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।"** इससे, वास्तव में उसका अर्थ था कि वह अब अपने भाइयों द्वारा दासत्व में बेचे जाने के कारण

आए दुःख और कष्टों पर मनन नहीं करता। परमेश्वर ने उसे दासत्व से उठाकर ऊँचे पद पर रख दिया है, जिसके साथ आए थे सामर्थ, धन, ज़िम्मेदारी, और एक सुन्दर पत्नी, जिसने उसे एक बेटा दिया था।

आयत 52. यूसुफ़ को **दूसरे** बेटे की आशीष मिली, जिसका **नाम उसने एप्रैम रखा**। फिर से, यूसुफ़ सकारात्मक रूप से शब्दों का हेरफेर कर रहा था, इस बार "फलवंतता" के विचार से। उसने इस चुनाव का कारण यह कहते हुए दिया, **"मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फलवंत किया है।"**

सात वर्षों के अकाल में यूसुफ़ का प्रबंध (41:53-57)

[53]मिस्र देश के सुकाल के सात वर्ष समाप्त हो गए; [54]और यूसुफ़ के कहने के अनुसार सात वर्षों के लिए अकाल आरम्भ हो गया। सब देशों में अकाल पड़ने लगा, परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न था। [55]जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा; तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी मांगने लगी; और वह सब मिस्रियों से कहा करता था, "यूसुफ़ के पास जाओ; और जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करो।" [56]इसलिए जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, और मिस्र देश में अकाल का रूप भयंकर हो गया, तब यूसुफ़ सब भण्डारों को खोल खोल के मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा। [57]इसलिए सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिए यूसुफ़ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल था।

आयतें 53, 54. जैसे जैसे समय बीता, मिस्र द्वारा भोगी **सात वर्षों की भरपूरी का अंत हो गया**, जैसा की **यूसुफ़** ने पूर्व-सूचना दी थी। तब **सात वर्षों के अकाल आरम्भ हो गया**। यह अकाल केवल मिस्र तक ही सीमित नहीं था; यह **आसपास** के सारे **देशों** में फैल गया था; फिर भी, **सारे मिस्र देश में अन्न था**। जबकि आसपास के क्षेत्रों के लोग अन्न की कमी भुगत रहे थे, मिस्री अपनी भरपूर आपूर्ति में से निकाल रहे थे जो की यूसुफ़ की योजना के अनुसार भण्डारों में संचय करके रखा गया था।

आयत 55. यह आयत दर्शाती है कि किस प्रकार फ़िरौन लोगों को यूसुफ़ की ओर जाने की दिशा दिखा रहा था: **जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा; तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी मांगने लगी; और फ़िरौन ने सब मिस्रियों से कहा, "यूसुफ़ के पास जाओ; और जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करो।"** अनाज के बांटे जाने पर यूसुफ़ का सम्पूर्ण अधिकार था।

आयतें 56, 57. जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, और मिस्र देश में अकाल का रूप भयंकर हो गया, तब यूसुफ़ सब भण्डारों को खोल खोल के मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा। उसी के साथ, परमेश्वर **सारी पृथ्वी के लोगों** को यूसुफ़ द्वारा आशीषित कर रहा था (देखें 12:2)। बहुत सारे लोग **मिस्र में अन्न मोल लेने के लिए यूसुफ़ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर**

अकाल था। "सारी पृथ्वी पर" वाली अभिव्यक्ति को शाब्दिक रुप से नहीं लिया जाना चाहिए। प्राचीन लोगों की विश्व-दृष्टी सीमित होती थी और वे अक्सर लाक्षणिक रूप से वाक्यांशों का उपयोग किया करते थे, जिनमें पृथ्वी के केवल वही लोग और देश शामिल होते थे जिन्हें वे जानते थे। इस लेखे में, "सारी पृथ्वी पर" का प्रत्यक्ष रूप से अर्थ है वे लोग और देश जो मिस्र के इर्द-गिर्द थे।[25]

अनुप्रयोग

विश्वास: संघर्ष करना, प्रतीक्षा करना, और पुरस्कृत किया जाना (अध्याय 41)

एक युवक के रूप में, यूसुफ़ ने शायद सोचा होगा की उसका जीवन वास्तव में समाप्त हो गया था जब वह अपने भाइयों द्वारा बेचा गया और मिस्र में दास बन गया। प्राचीन जगत में दासों को स्वतंत्रता, गरिमा और विरासत से वंचित रखा जाता था। जब यूसुफ़ अपने वतन से बंधक बनाकर ले जाया जा रहा था, तो वह केवल दो स्थिर बातों को थामे रह सकता था: एक अपने पिता की याद जो उससे बहुत प्रेम करते था और कुछ असामान्य स्वप्न जो सुझाते थे कि उसके जीवन के लिए परमेश्वर की एक योजना है (37:3-10)। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने सोचा होगा कि किसी के साथ तब कैसे कुछ अच्छा हो सकता है जब वह अपने घर से बलपूर्वक मिस्र में दास बनने के लिए ले जाया जा रहा हो। दासों को सामान्य रूप से जीवित औज़ारों या कठपुतलियों के रूप में देखा जाता था; यूसुफ़ के पास उचित व्यव्हार की कोई निश्चितता नहीं थी। उसका स्वामी उसके लिए जीवन के साधारण आनंद, जैसे कि विवाह करना और परिवार बढ़ाना उपलब्ध कराने के लिए बाध्य नहीं होंगे। उसके पास दासत्व से स्वतन्त्रता पाने की कोई आशा नहीं थी, न ही कोई प्रतिज्ञा कि उसके जीवन का कोई महत्त्व होगा या कब्र के अतिरिक्त कोई और लक्ष्य।

निसंदेह यूसुफ़ ने परमेश्वर के विशेष में उत्तेजक रूप से, अब्राहम, इसहाक और उसके पिता, याकूब को प्रकट होने की कहानियां सुनी होंगी। परमेश्वर ने खतरों में उनका मार्गदर्शन किया था और रक्षा की थी, अद्भुत तरीके से उनको आशीष देते हुए। इस ज्ञान ने यूसुफ़ को मिस्र में उसके दासत्व के वर्षों के दौरान संभाले रखा होगा। इसने उसे प्रभु में उसके विश्वास के प्रति पोतीपर और उसकी पत्नी को (39:2-5, 9), बंदीगृह के दारोगा को (39:21-23, फ़िरौन के पिलानेहारे और पकानेहारे को (40:8), और स्वयं फ़िरौन को भी (41:16, 25) गवाही देने में योग्यता प्रदान की होगी।

विश्वास को अक्सर इतिहास के दूर के दृश्य की आवश्यकता होती है जैसे परमेश्वर लोगों और राष्ट्रों के लिए, अपने उद्देश्यों को प्रकट करता है। मिस्र की ओर जा रहे उस काफ़िले के साथ पैर घसीटकर चलते हुए, यूसुफ़ ने अपने पहले के जीवन का और उन स्वप्नों का भी पुनर्विचार किया होगा जो उसकी किशोरास्था के दौरान उसे आए थे। निश्चित रूप से उसने सोचा होगा, "क्या यह संभव है की परमेश्वर ने, जिसने मुझे वो स्वप्न दिए, अब भी मेरे लिए एक महान

भविष्य रखा है? क्या मेरा परिवार कभी दोबारा मुझे देख पाएगा? यदि नहीं, तो वे कैसे मेरे आगे झुक सकते हैं? परमेश्वर के संसार के सभी परिवारों को आशीष देने की योजना में क्या कभी मेरी भी कोई भूमिका हो सकती है?"

जो कुछ यूसुफ़ ने देखा और सहा वे इन प्रश्नों के सुखदायी निष्कर्ष के विपरीत था। परदेश में एक दास के रूप में वह परमेश्वर पर अपने विश्वास की वृद्धि पर निर्भर रहा। अपने स्वामी की पत्नी को दिए गए उत्तर में यह स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, जिसने मिस्र में उसे बहकाना चाहा था। उसने उसकी इच्छा का विरोध किया क्योंकि उसने यह कहा कि इससे ऐसा करके वह उसके पति के प्रति विश्वासघात करेगा, और साथ ही ऐसा करके वह "परमेश्वर का अपराधी" भी ठहरेगा (39:9)।

पोतीपर के घर में रहने के दौरान यूसुफ़ के विश्वास और इमानदारी का जो पुरस्कार उसे मिला था, वह उसकी अपेक्षा से बिलकुल विपरीत रहा होगा। जब पोतीपर की पत्नी ने उससे झूठ बोला, ताकि पोतीपर विवश हो जाए उसकी बनावटी कहानी और एक दास की कहानी में से चुनने के लिए, यूसुफ़ को बंदीगृह में डाल दिया गया। वह कितना समय बंदीगृह में था इससे पहले की दारोगा की दृष्टी उस पर पड़ी, पाठ इसे प्रकट नहीं करता; परन्तु, शायद यूसुफ़ को अपनी विश्वसनीयता साबित करने में अधिक समय नहीं लगा होगा, जैसा की उसने पहले भी अपने स्वामी की दृष्टी में किया था (39:3, 4)। तब बंदीगृह के दारोगा ने उसे सभी बंदियों का प्रभारी ठहरा दिया था (39:22)।

फिर से, वर्णनकर्ता कोई भी टिप्पणी करता है कि कितना समय बिता होगा इससे पहले की फ़िरौन अपने पिलानेहारे और पकानेहारे से क्रोधित हुआ था; परन्तु उनके विरुद्ध आरोप गंभीर थे, और उसने उन्हें बंदीगृह में भेज दिया। जब यूसुफ़ ने उन्हें उदास पाया और उनके दुःखी चेहरों के विषय में पूछा, तो उन्होंने विचित्र स्वप्नों के विषय में बताया। क्योंकि अभी राजा के पण्डितों और ज्योतिषियों तक उनकी पहुंच नहीं रही थी, उनके स्वप्नों के अर्थ का अनुवाद करने वाला कोई नहीं था (40:5-8)।

समय के बीत जाने और कारागार में डाले जाने के अनुचित दण्ड के बावजूद, यूसुफ़ अपने विश्वास को थामे रहा था बिना संदेह किए। उसने इन भूतपूर्व अधिकारियों से कहा "स्वप्नों का अर्थ बताना परमेश्वर का काम है" (40:8), जो कि उसमें उसके और आगे विश्वास करने की गवाही थी। जब यूसुफ़ ने उन दोनों पुरुषों से अपने स्वप्न सुनाने को कहा, वह स्वप्नों का अर्थ बताने की योग्यता होने का दावा नहीं कर रहा था। वह जानता था की वह परमेश्वर के प्रवक्ता से अधिक कुछ नहीं है।

यूसुफ़ ने स्वप्नों का अर्थ बताया और दोनों ही सच हुए, जैसा कि उसने कहा था। उस पिलानेहारे को राजमहल में लौटा दिया गया, राजा की मेज़ पर दाखरस परोसने के लिए, जबकि उस पकानेहारे को मृत्यु का दण्ड सुनाया गया। परंतु, यूसुफ़ की निराशा और दुःख बरकरार रहे क्योंकि पिलानेहारा फ़िरौन के समक्ष उसका वर्णन करना भूल गया था (40:23)। दो और वर्षों तक उसके

विश्वास की परीक्षा होती रही इससे पूर्व कि मिस्र में उसके अच्छे समय की शुरुआत हुई।

जब समय उचित होता है, तब परमेश्वर संसार में अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लोगों को खड़ा करता है। यूसुफ़ के संघर्ष की कहानी हमें स्मरण कराती है कि परमेश्वर मनुष्य की समय-सारणी के अनुसार कार्य नहीं करता। हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को तब क्यूँ बुलाया जब वह युवक था, फिर भी प्रतिज्ञा की संतान से उसे तब तक आशीषित नहीं किया जब तक सारा नब्बे वर्ष की और वह सौ वर्ष का नहीं हो गए। हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर ने इसहाक को चालीस वर्ष का होने तक पत्नी को (25:20) और साठ वर्ष का होने तक दो बेटों को (25:26) आशीष क्यों नहीं दी। फिर, परमेश्वर ने हारान में इतने लम्बे समय तक लाबान द्वारा याकूब से छल करना और उसका लाभ उठाना क्यों होने दिया, इससे पूर्व की वह अपनी पत्नियों और बच्चों समेत प्रतिज्ञा के देश को लौट सका? केवल एकमात्र उत्तर यह हो सकता है कि परमेश्वर एक कुम्हार है, जो अपने लोगों के जीवनों को ढालता और आकार देने का प्रयत्न करता है जैसा की एक कुम्हार मिट्टी के बर्तनों के साथ करता है। जब मिट्टी विरोध करती और हाथों से फिसलती है, वह फिर बार-बार उस पर काम करता रहता है, उसे वह बर्तन बनाने का प्रयत्न करता है जो संसार में आशीष लाने के उसके उद्देश्य में उपयोगी हो सके (यिर्म. 18:1-4)।

सभी कुलपतियों को कुम्हार के हाथों द्वारा दोबारा आकार लेना पड़ा, कुछ को दूसरों से अधिक। ढालने की प्रक्रिया किसी किसी व्यक्ति में दूसरों से अधिक समय लेती है। मूसा कितना समय जीया इससे पहले कि परमेश्वर उसका इस्राएल को बंधुवाई से छुड़ाने वाले के रूप में प्रयोग कर सका? एक नवयुवक होने के नाते, उसकी परवरिश राजभवन में हुई, फ़िरौन की बेटी के बेटे के रूप में। मिस्र के सारे ज्ञान और बुद्धि की शिक्षा पाकर, वह "वचन और कर्म दोनों में सामर्थी" बना (प्रेरितों 7:22)। फिर, जब वह चालीस वर्ष का हुआ, उसने एक मिस्री की हत्या की जो कि एक इस्राएली के साथ दुर्व्यवहार कर रह था। उस समय उसने सोचा कि "उसके भाई यह समझ रहे हैं कि परमेश्वर उसके हाथों उनका उद्धार करेगा" (प्रेरितों 7:23-25)। परन्तु जब हत्या के विषय में पता लगा तो उसके भाइयों ने उसे ठुकरा दिया। उसे निर्जन प्रदेश में भागना पड़ा और वहां पर चालीस वर्षों तक रहना पड़ा। परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल का उद्धारकर्ता होने के लिए बुलाया जब वह अस्सी वर्ष का था।

उसी तरह, परमेश्वर को यूसुफ़ को भी अपने दैवी कुम्हार के चक्के पर ढालना पड़ा। दासत्व और कारागार में मुलायम किए जाने के पश्चात, तीस वर्ष की आयु में, यूसुफ़ आदर का वह बर्तन बनने के लिए तैयार था जिसका प्रभु संसार की आशीष के लिए उपयोग कर सके (देखें यिर्म. 18:4-6)। जब यूसुफ़ ने अपने महत्वहीन होने का एहसास किया, तब समय सही था परमेश्वर के उसे कारागार से उठाने और फ़िरौन के सिंघासन के पास, मिस्र में अधिकार में दूसरे स्थान पर, बैठाने का। यह हो सका क्योंकि उसने नम्र होना सीख लिया था; उसने किसी

विशेष ज्ञान या स्वप्नों का अर्थ बताने में अंतर्दृष्टि होने का दावा नहीं किया। इसके विपरीत, उसने कहा, "मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फ़िरौन के लिए शुभ वचन देगा" (41:16)। उसने परमेश्वर को महिमा दी जब उसने सटीक रूप से फ़िरौन के स्वप्न का, मिस्र में सात वर्षों के बहुतायत के पश्चात सात वर्षों के आने वाले अकाल का अर्थ बताया (41:25-32)।

परमेश्वर ने संघर्षों और परीक्षाओं के द्वारा यूसुफ़ को पूरी तरह से तैयार कर दिया था उस ऊंचे अधिकार के पद पर स्थापित किए जाने के लिए। फिर, जब लोग उसके समक्ष झुकते, तो उसका हृदय घमंड से ऊपर नहीं उठने वाला था। उसी के साथ, परमेश्वर ने फ़िरौन के हृदय को स्पर्श किया ताकि वह यूसुफ़ को मिस्र में एक सामर्थशाली ओहदा दे, ताकि वह पूरे सामर्थ के साथ साथ बहुतायत के वर्षों के बाद आने वाले अकाल के सात वर्षों के लिए आवश्यक प्रबंध कर सके। परमेश्वर ने यहाँ उस बात का प्रदर्शन किया जिसका कथन बाद में बुद्धिमान व्यक्ति ने किया: "राजा का मन नालियों में जल के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर को मोड़ देता है" (नीति. 21:1)। इस कथन का यह अर्थ नहीं है की परमेश्वर शासकों को उनकी स्वयं की इच्छा के विरूद्ध कार्य करने पर विवश करता है, जैसे कोई मनुष्य सचमुच पानी को किसी दूसरी नाली में बलपूर्वक मोड़ता है। इसके विपरीत, यह हमें बताता है कि परमेश्वर इतिहास में अपनी इच्छा में ऐसी स्थितियां तैयार करते हुए कार्य करता है जिनमें स्वाभाविक रूप से लोग उसकी इच्छा का प्रसन्नतापूर्वक प्रत्युत्तर देते हैं। इस प्रकार से, परमेश्वर ने कार्य किया यूसुफ़ को कारागार से निकालकर फ़िरौन के दाएं हाथ तक लाने के लिए।

यूसुफ़ की कहानी कुछ कुछ इस बात के सदृश है कि किस प्रकार परमेश्वर उन पापियों को स्वीकार करता है जो अपने प्रेममय पिता के पास घर लौटते हैं। यीशु का उड़ाऊ पुत्र वाला दृष्टांत एक ऐसे नवयुवक की कहानी है जिसने अपने पिता से संपत्ति का हिस्सा माँगा और अपनी स्वेच्छा से घर छोड़ कर चला गया। वह दूरदेश चला गया और अपना धन वेश्याओं के साथ उपद्रवी जीवन में व्यर्थ गँवा दिया। अंततः उसे सूअरों के बाड़े में होश आया बिना किसी मित्र, पैसा, और उचित भोजन के (लूका 15:11-32)। एक युवक होते हुए घर पर यूसुफ़ को अपने भाइयों से इर्ष्या मिली क्योंकि वह अपने पिता का चहेता था; अंततः उन्होंने उसे दास होने के लिए बेच दिया। एक दूरदेश (मिस्र) में, वह पहले एक दास बना और फिर बंदी। ये दोनों ही पुरुष बेसहारा हो गए थे। इस दशा में, यूसुफ़ ने अपने सांसारिक पिता और अपने स्वर्गीय पिता (परमेश्वर) को भी स्मरण किया, जिसने उसे भविष्य में महान बनने के स्वप्न दिए थे। उड़ाऊ पुत्र ने स्मरण किया कि किस प्रकार उसका पिता (जो परमेश्वर को दर्शाता है) अपने सेवकों से व्यव्हार करता था - जो उससे बेहतर था जो उसे उस विदेश सूअरों के बाड़े में मिल रहा था। उसने घर लौटने और एक सामान्य मज़दूर, या एक दास के रूप में अपने पिता की सेवा करने का निर्णय लिया।

जब यूसुफ़ ने अपने स्वर्गीय पिता (परमेश्वर) का अपने स्वप्नों के अनुवाद का

श्रेय देते हुए आदर किया, तब राजा ने उसे बंदीगृह से स्वतन्त्र किया। उसने उसे साफ़ भी कराया, हजामत कराई (शायद सर और दाढ़ी दोनों), और उसे राजसी वस्त्र पहनाए। कुछ इसी समान्तर तरीके से वह उड़ाऊ पुत्र पीड़ा में था, अपने ही बनाए बंदीगृह में। जब उस पुत्र ने अंततः एक सेवक के रूप में घर लौटने का साहस जुटाया, तब उसके पिता ने उसे सम्मानित पुत्र के रूप में स्वीकार किया, गले लगाकर और चुम्बन देकर। इस पिता ने ऐसा व्यवहार किया मानो उस पुत्र की विद्रोही जीवनशैली द्वारा आया कलंक कभी था ही नहीं। शायद सेवकों को उसे नहलाने का आदेश दिया गया होगा ताकि उसे सूअरों के बाड़े की मलिनता से शुद्ध किया जा सके। हम पढ़ते हैं की उड़ाऊ पुत्र के पिता ने उसे सबसे उत्तम वस्त्र पहनाए, जो कि पुत्र होने का एक उपयुक्त प्रतीक है (लूका 15:22, 23)।[26]

फ़िरौन ने यूसुफ़ का नए पद में स्वागत व सम्मान, सोने की जंजीर और अपनी अगूँठी पहनाकर किया। वज़ीर के दफ्तर के ये चिह्न, यूसुफ़ को आदेश जारी करने और खुद की और अपनी पत्नी, जिसे फ़िरौन ने उसे उपहार स्वरूप प्रदान किया था, की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जितना चाहे उतना धन व्यय करने का अधिकार देता था। उसका प्राथमिक ज़िम्मेदारी यह थी कि वह अगूँठी का प्रयोग अनाज के बड़े भण्डार गृहों के निर्माण के लिए पर्याप्त मात्रा में धन जारी करने और मिस्र पर आने वाले सात वर्ष के अकाल से बचने के लिए अनाज एकत्रित करने, संचय करने और उस अनाज की रखवाली के लिए अधिकारियों को नियुक्त करना था।

उड़ाव पुत्र के लौटने पर भी उसके पिता ने उसे अगूँठी[27] के साथ साथ उत्तम वस्त्र और पावों में पहनने के लिए जूतियाँ प्रदान की थी। एक मज़दूर या दास के रूप में स्वीकार किए जाने के बजाय, वह एक बार फिर एक पुत्र के रूप में ऊँचा किया गया। जबकि उसने अपनी सारी सम्पत्ति कुकर्म में उड़ा दी थी फिर भी उसके पिता ने उस पर भरोसा जताया और फिर से उसे भविष्य में उसकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए असीमित अधिकार प्रदान किया।

जिस प्रकार फ़िरौन ने यूसुफ़ को बंदीगृह से बाहर निकालकर स्वीकार किया और हर प्रकार की सम्पत्ति और सम्मान से आशीषित किया उसकी तुलना उस पिता (परमेश्वर) से की जा सकती है जिसने अपने उड़ाव पुत्र को जब वह दूर देश से घर लौटा तो उसका स्वागत कैसे किया था। अपने अनुग्रह के द्वारा ही उसने उसे क्षमा किया और सम्पत्ति और सम्मान से आशीषित किया। संक्षिप्त में कहा जाए तो यही वह आशीष है जो परमेश्वर के बच्चों को आज आशा प्रदान करती है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता है कि चाहे हम कितनी भी उससे दूर चले जाएं, वह तब भी हमारा प्रेमी पिता है। वह उत्सुकतापूर्वक हमारे वापस घर आने का प्रतीक्षा करता है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि वह हमें अपने पुत्र और पुत्रियों के रूप में स्वीकार करता है; वह हमें अपने अत्यधिक अनुग्रह के द्वारा प्रेम करता है और क्षमा करता है।

मसीहियों को भूतकाल के सभी कड़ुवे अनुभवों को भुलाकर, नए जीवन की नई प्रेरणा के साथ इसके अवसर, आशीष और ज़िम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना

चाहिए। कुछ लोग अपने जीवन को दो चोरों के मध्य क्रूस पर चढ़ाते हैं: "बीते कल" और "आने वाले कल।" हमें बीते हुए गलतियों के दोष को आज का आनंद और आशीष नहीं चुराने देना चाहिए। न ही हमें अपने आने वाले भविष्य के विषय में अधिक चिंता करना चाहिए। यीशु ने कहा, "सो कल के लिए चिन्ता न करो, ... आज के लिए आज ही का दुःख बहुत है" (मत्ती 6:34)। जो हुआ और जो होने वाला है उसके विषय में कुढ़ने से स्वंय की ही हार होती है।

परतंत्र के तेरह वर्ष - पहले तो दास और उसके बाद बंदी - अब यूसुफ़ को बंदीगृह से मिस्र के सिंहासन की ओर ले जाया जा रहा है। राजा ने अपने बाद द्वितीय स्थान के अधिकारी को एक पत्नी और बहुत धन देकर आशीषित किया और उसे मिस्र के धन से संबंधित आज्ञा देने का अधिकार प्रदान किया कि मिस्र में आने वाले अकाल से निपटने के लिए तैयारी कर सके। यूसुफ़ अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति विश्वासयोग्य था और उसने अपने आपको न तो बुरे संस्मरण या न भविष्य की चिंता से विचलित होने दिया। जहाँ तक हम बाइबल के वृतांत से जानते हैं, उसने अपने समय का सदुपयोग किया, अपने आशीषों का आनंद उठाया और विश्वासयोग्यता से अपने ज़िम्मेदारियों को निभाया।

परमेश्वर इससे बढ़कर उनसे क्या चाहता है जो उसके बुलाए हुए हैं? इस प्रकार की बुलाहट को व्यवहार में लाने के बजाय उसके बारे में बातें करना आसान है। बंदीगृह में सेवा के कारण जो बंदी मसीह के पास आते हैं उनके सम्मुख दो प्रमुख समस्याओं का अनुभव होता है: पहला यह कि जो उन्होंने पहले बुरे कार्य किए हैं उससे वे प्रताड़ित किए जाते हैं। कभी कभी ये बातें उन्हें स्मरण होती हैं और उनको मसीह के आनंद से वंचित कर देती हैं। जबकि वे यह जानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है लेकिन फिर भी वे अपने आपको क्षमा करने में संकट का सामना करते हैं। दूसरी बात, वे अपने भविष्य के बारे में घंटों चिंतित रहते हैं: "क्या कभी मैं स्वतंत्र हो पाऊँगा? क्या मुझे नौकरी मिलेगी? मैं कहाँ रहूँगा? क्या मेरे मित्र और परिवार वाले मुझे स्वीकारेंगे और एक नई ज़िन्दगी प्रारंभ करने में मेरी सहायता करेंगे?" सत्य तो यह है कि उनके अपराधिक अभिलेखन का परिणाम उनके जीवन भर बना रहता है; और कुछ तो उन पर भरोसा करने से भी कतराते हैं। स्पष्ट रूप से देखा जाए तो जैसा कि यूसुफ़ ने अनुभव किया वैसा हर एक परिवर्तित बंदी, अमीरी का या ऊँचे भविष्य का आनंद नहीं उठा पाते हैं। कोई भी मसीही जो कर सकता है वह यह है कि वह हर दिन एक बेहतर व्यक्ति बनने का प्रयास करे, परमेश्वर पर भरोसा करे कि वह उसके बेहतर जीवन के लिए दरवाज़ा खोले ठीक वैसे ही जिस प्रकार उसने यूसुफ़ के लिए किया था।

परमेश्वर के कुछ महान सेवक इस लिए बंदी बनाए गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सेवा बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ की। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह को ही ले लीजिए, उसे धार्मिक आगुओं और उसके अपने परिवार के लोगों ने बहुत सताया; उसके राजनैतिक विरोधियों ने उसे बंदी बनाया (यिर्म. 11:21; 15:15; 17:18-20; 20:2, 10; 38:6)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को न केवल

बंदीगृह में डाला गया बल्कि हेरोदेस ने उसका सिर इस लिए कलम करा दिया क्योंकि उसने उसके भाई की पत्नी हेरोदियास से व्यभिचारपूर्ण विवाह करने के लिए उसकी भर्त्सना की थी (मरकुस 6:17-29)। एक परमेश्वर के बच्चे का सबसे बड़ा उदाहरण प्रेरित पौलुस है। जब उसने कुरिथियों की दूसरी पत्री लिखी (ई. 55 या 56), तब तक उसे कई बार बंदी बनाया गया था (2 कुरिं. 11:23); और यरूशलेम, कैसरिया और रोम, जहाँ अंततः ई. 67 में उसको शहीद होना पड़ा, उसे और भी कई ऐसे बंदी बनाए जाने का सामना करना पड़ा था (2 तीमु. 4:6-8)।

पौलुस को भी अपने पुराने दिनों को पीछे छोड़ना था। स्वंय मसीही बनने से पूर्व उसने मसीहियों को सताने, बंदी बनाए जाने और उनकी हत्या जैसे बुरे बातों का समर्थन किया था (प्रेरितों. 7:58-8:3; 26:9-11; 1 तीमु. 1:12-16)। क्योंकि पहले जो हो चुका है उसको बदलना असंभव है, तो पौलुस ने इन घटनाओं को अपने रास्ते में नहीं आने दिया जो उसके सेवा में बाधाएं डाल सकतीं थीं। उसने मसीहियों से आग्रह किया कि वे भूतकाल की सभी बातें भूल जाएं और आगे की ओर, जो उनके सामने धरा है, बढ़ें "ताकि वह इनाम पाएं, जिस के लिए परमेश्वर ने मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (फिलि. 3:13, 14)। क्योंकि भूतकाल को हम नहीं बदल सकते और भविष्य पर हमारा नियंत्रण नहीं होता है तो हमें हर एक दिन जिसका हम सामना करते हैं, जितना हो सके, बेहतर बनाएं।

प्रतिदिन की परीक्षा और निराशाजनक स्थिति के सामने सकारात्मक होना आसान नहीं है; इसमें मानसिक अनुशासन की आवश्यकता है कि प्रतिदिन हम उसका आनंद उठाएं और हम अपने आपको उसके हाथों में सौंपे ताकि अन्य लोगों के लिए आशीष बनें। बंदियों को भी दूसरे बंदियों या चौकीदारों से सकारात्मक तरीके से बातचीत करने का अवसर प्राप्त है, चाहे वे शब्दों के द्वारा हो या फिर कार्य के द्वारा। यूसुफ़ ने बंदीगृह में इसका अभ्यास किया और यह सिद्ध किया कि वह विश्वासयोग्य है। बंदीगृह के अधिकारी ने इस आदर्श बंदी को एक दरोगा बनाया और "अन्य बंदियों" को उसके अधीन किया (39:21-23)।

इसके बावजूद, यूसुफ़ को अपने भूतकाल को भूलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और उसको यह समझने में कठिनाई होने लगी कि उसे बंदी बनने के लिए क्यों बेचा गया। जो कुछ हुआ है अपनी ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करने के बजाय, उसने कहा, "क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से मुझे चुरा कर ले आए हैं" (40:15)। कुछ हद तक जो उसके भाइयों ने उसके साथ किया था और वे हृदय विदारक बातें कि वह मिस्र में एक दास और बंदी बना, उस पर ठहरा रहा। प्रभु जानता था कि यदि यूसुफ़ उन दयनीय बातों पर, जो उसके साथ हुई थीं, अपने मन को लगाए रहेगा तो वह मिस्रियों की ओर से कभी भी एक प्रभावशाली प्रशासक के रूप में कार्य नहीं कर सकता था।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अपने आप पर तरस खाने से बचने के लिए, जो आवश्यकता में है उसकी सेवा करें। यूसुफ़ तीस वर्ष का हो चुका था जब परमेश्वर

ने सोचा कि यह उचित समय है जब उसको उसके निचले स्तर, दास और बंदी से उठाकर, उस समय के सबसे बड़े पद में से एक, मिस्र का वज़ीर, के पद पर स्थापित करे। इस स्थिति में अब वह यह नहीं सोचेगा कि उसके भाइयों ने उसके साथ कैसे दुर्व्यवहार किया था। उसका निर्णय और ऊर्जा, सकारात्मक योजना, जैसे कि सात वर्ष के अकाल से निपटने के लिए अनाज संचय करने के लिए भंडारगृह का निर्माण करना था, ताकि लोगों को भूखा न रहना पड़े।

परमेश्वर ने यूसुफ़ और उसके पत्नी, आसनत को दो पुत्र देकर आशीषित किया; और जो नाम उनको दिया गया उससे न केवल यह विदित होता है कि यूसुफ़ का कार्य न केवल मिस्र वासियों के लाभ के लिए था बल्कि वह उसके लिए भी बड़ा मायने रखता था। उसने प्रथम पुत्र का नाम यह कहकर "मनश्शे" रखा कि "परमेश्वर ने मुझ से सारा क्लेश और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है" (41:51)। दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम रखा जिसका अर्थ "मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है" (41:52)। यूसुफ़ एक दास और बंदी के रूप में बांझ था परंतु विवाहोपरांत वह आशीषमय हो गया और दो पुत्रों का पिता बना। वह इससे भी बढ़ कर आशीषमय होने वाला था क्योंकि उसने मिस्र और उसके आस-पास रहने वाले लोगों, कनान को मिलाकर, के लिए अनाज (रोटी) का प्रबंधन किया था।

उपसंहार। यूसुफ़, अब्राहम और उसके वंशों के लिए परमेश्वर की इच्छा कि "वे आशीष का मूल हों," को पूरा कर रहा था (12:2)।[28] वह पोतीपर और उसके परिवार वालों, बंदीगृह के दारोगा और उसके संगी बंदियों के लिए आशीष का कारण बना (39:1-5, 20-23)। परमेश्वर की आशीष यूसुफ़ के द्वारा पूरे मिस्र और उससे आगे, यहाँ तक कि उसके परिवार वालों तक पहुँची।

समाप्ति नोट्स

[1]अल्फ्रेड जे. होएर्थ, *आर्किओलोजी एण्ड दि ओल्ड टेस्टमेंट* (ग्रान्ड रैपिड्स, मिची.: बेकार बुक्स, 1998), 57. [2]जॉन ब्राइट, *अ हिस्ट्री ऑफ़ इस्राएल,* थर्ड एड. (फिलडेल्फिया: वेस्टमिन्स्टर प्रेस, 1981), 60. [3]के. ए. कितचेन, *ऑन द रिलायबिलिटी ऑफ़ दि ओल्ड टेस्ट मेंट* (ग्रान्ड रैपिड्स, मिची.: वेमी. बी. ईर्द्मैंस पब्लिशिंग कंप., 2003), 347. अह्मोस ने हिक्सोस को मिस्र से बाहर निकाल दिया और अठारहवी राजवंश की स्थापना की। उसने "नए राजा" को राजपाठ सौंपा "जो यूसुफ़ को नहीं जानता था" (निर्गमन 1:8)। क्योंकि वे परदेशी थे और उनके लिए डर का कारण थे, उसने इस्राएलियों को दास बना लिया; और वे उसी दासत्व में जीते रहे जब तक मूसा का वहाँ से बाहर निकलने का समय नहीं आया। [4]रोनाल्ड यंगब्लड, नोट्स ऑन जेनेसिस, इन *दि NIV स्टडी बाइबल,* एड. केनेथ बार्कर (ग्रान्ड रैपिड्स, मिची.: जोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 67. [5]लुडविग कोएह्लेर एंड वाल्टर बौम्गार्तनेर, *द हिब्रू एंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टमेंट,* स्टडी एड., ट्रांस. एंड एड. एम. इ. जे. रिचर्डसन (बोस्टोन: ब्रिल, 2001), 1:353. शब्द "ज्योतिषी" (חַרְטֹם, *चारतोम)* मूसा के समय में पाए जाने मिस्री भावी कहने वाले (निर्गमन 7:11, 22; 8:7, 18, 19; 9:11) और दानिएल के समय बेबीलोन में पाए जाने वाले (दानिएल 1:20; 2:2) भावी कहने वालों के वर्णन में भी प्रयोग किया जाता था। [6]के. ए. कितचेन, "मैजिक एंड सोर्सरी," इन *द न्यू बाइबल डिक्शनरी,* एड. जे. डी. डॉगलस (ग्रान्ड रैपिड्स, मिची.: वेमी. बी.

ईर्द्मैंस पब्लिशिंग कंप.,1962), 768-70. [7]जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूस, एंड मार्क डब्ल्यू. चावालास, *दि आईव्हीपी बाइबल कमेंटरी: ओल्ड टेस्टमेंट* (डाउनर्स ग्रोव, Ill.: इन्टर्वर्सिटी प्रेस, 2000), 72. [8]ब्रूस के. वाल्टके, *जेनेसिस: अ कमेंटरी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशर्स, 2001), 531. [9]विक्टर पी. हैमिलटन, *द बुक ऑफ़ जेनेसिस: अध्याय 18-50*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंटरी ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अर्ड्समन पब्लिशिंग कंपनी, 1995), 498. [10]डौनल्ड बी. रेडफोर्ड, *अ स्टडी ऑफ़ द बिब्लिकल स्टोरी ऑफ़ जोज़फ़ (जेनेसिस 37-50)* (लीडेन: ई. जे. ब्रिल, 1970), 206-7.

[11]वाल्टन, मैथ्यूस, एंड चवालाज़, 72. [12]"आज्ञा के अनुसार चलना" शब्द *(नशक)* से आता है जिसका शाब्दिक अर्थ है "चुम्बन।" इस सन्दर्भ में, शायद इस शब्द का प्रयोग सम्मान देने के किया गया है, क्योंकि उस समय राजा के पैरों को चूमने की प्रथा हुआ करती थी। (मिल्टन सी. फिशर, *TWOT* में, 2:606.) [13]रोलैंड डा वौक्स, *एन्शंट इस्राएल: इट्स लाइफ एंड इंस्टीट्युशन*, ट्रांस. जॉन मकह्यू (लन्दन: डार्टन, लोंग्मन & टॉड, 1961), 125, 130. [14]डब्लू. ऐ. वार्ड ने छः शीर्षकों का प्रस्ताव रखा जिनका यूसुफ़ के पद के लिए प्रयोग किया जा सकता है: "ऊपरी और निचले मिस्र के अनाज भंडारों का अध्यक्ष, शाही-मुहर वाहक, परमेश्वर का पिता; दो देशों के प्रभु का महान प्रबंधक, राज दरबारियों में उच्चतम, सम्पूर्ण देश में प्रमुख" (डब्लू. ऐ. वार्ड, "द इजिप्शियन ऑफिस ऑफ़ जोज़फ़," *जर्नल ऑफ़ सेमिटिक स्टडीज़* [अप्रैल 1960]: 150)। [15]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एंड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *अ हिब्रयु एंड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टमेंट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लेरेंडॉन प्रेस, 1962), 1058. [16]के. ए. किचन, "जोज़फ़," इन *द न्यू बाइबल डिक्शनरी*, 658-59. [17]वाल्टके, 533. [18]इसी प्रकार से, दनिय्येल और उसके तीन मित्रों को बेबिलोनी नाम दिए गए थे उन्हें बेबिलोनी संकृति में समाविष्ट करने के लिए (दनिय्येल 1:6, 7)। [19]हैमिलटन, 507-8. [20]पहले उदाहरण में, "परमेश्वर [देवता]" को बड़े अक्षरों में केवल इसलिए लिखा गया है क्योंकि वह वाक्य का पहला अक्षर है; परन्तु, एक मूर्तिपूजक होने के नाते, फ़िरौन ने शायद सोचा की यूसुफ़ का "देवता" मौजूद कई देवताओं में से एक ही था।

[21]आर. के. हैरिसन, "आसनत," *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया* में, रेव. एड., ज्यॉफ्री डब्ल्यू. ब्रोम्ले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अर्द्मंस पब्लिशिंग। [22]के. ए. किचन, "पोटीफ़ेराह," *न्यू बाइबल डिक्शनरी* में, 1012. आजकल, आधुनिक अंग्रेज़ी अनुवाद अंत के "h" को छोड़ देते हैं, क्योंकि यह उच्चारण में नहीं आता। [23]ओन को "हेलिओपोलिस" कहा जहा था, जिसका अर्थ है "सूर्य (पूजा) का नगर।" [24]उत्पत्ति में अन्य स्थान पर, "समुद्र की बालू" का उल्लेख अब्राहम, इसहाक और याकूब के अनगिनत वंशजों के लिए किया गया है (22:17; 32:12)। [25]नए नियम में ऐसी ही सामान्य अभिव्यक्तियों हैं जिनका प्रयोग सारी पृथ्वी का उल्लेख करने के लिए किया गया है (देखें लूका 2:1; प्रेरितों 2:5; कुलु. 1:5, 6)। [26]फिर भी, पश्चातापी पापी विश्वास और बपतिस्मा के द्वारा परमेश्वर की संतान बन जाते हैं और उन्हें मसीह की धार्मिकता के वस्त्र पहनाए जाते हैं (गला. 3:26, 27)। [27]यह वे प्रतीक चिह्न हैं जो यह दर्शाता है कि वह एक स्वतंत्र आदमी या फिर पुत्र है। (आई. हॉवर्ड मार्शल, *द गॉस्पल ओफ़ लूकः ए कमेंट्री आन द ग्रीक टेक्स्ट,* द न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमेंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1978], 610-11.) [28]इब्रानी पाठ में 12:2 का वक्तव्य एक आदेश है। कुलपति को पृथ्वी के सभी परिवारों (कुलों) के लिए का कारण होना था (देखें 18:18; 22:18; 28:14)।